मेधा पाटकर



जन्म 1954



मेधा पाटकर का जन्म 1954 में मुंबई, भारत में हुआ था. उनके दोनों माता-पिता मानवाधिकारों के लिए काम करते थे और अब मेधा भी आम लोगों की ज़िंदगी को बेहतर बनाना चाहती थीं.

1980 के दशक के मध्य में मेधा ने अपने शोध के दौरान नर्मदा घाटी की यात्रा की. जब वो वहां थी, तब मेधा ने नर्मदा नदी के किनारे एक बड़े बांध बनने की योजना के बारे में सुना. उससे नदी का रुख बदल जाएगा और आस-पास की ज़मीन और घर बाढ़ में डूब जाएंगे.

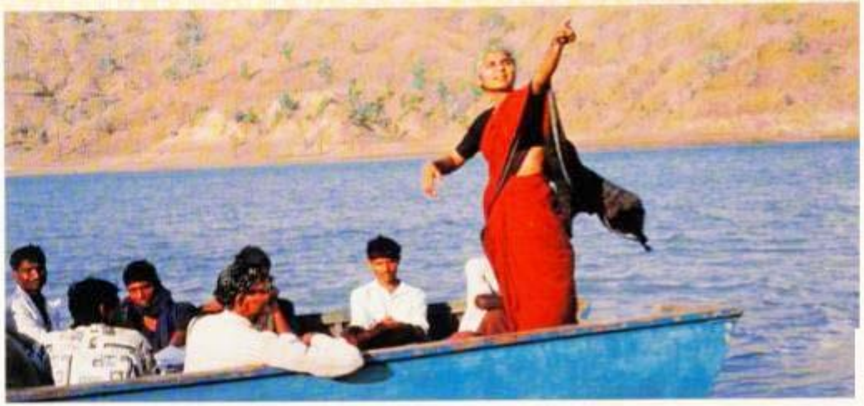
भारत में नदियों पर बांध



सूखे क्षेत्रों में पानी उपलब्ध कराने के लिए अक्सर नदियों पर बाँध बनाए जाते हैं. हालाँकि, नर्मदा नदी क्षेत्र में बाँधों के कारण हजारों किलोमीटर भूमि पानी में डूब जाती. हजारों लोग और जानवर अपना घर खो देते. मेधा ने लोगों को इन बांधों के निर्माण के खिलाफ शांतिपूर्वक विरोध करना सिखाया.

मेधा ने गांव-गांव तक उस बात की जानकारी पहुंचाई. उन्होंने शांतिपूर्ण मोर्चे का भी नेतृत्व किया और बड़ी-बड़ी भीड़ों को भाषण दिये. मेधा को पुलिस ने गिरफ्तार किया और उन्हें पीटा, क्योंकि पुलिस को वो एक उपद्रवी लगीं. लेकिन मेधा ने हार नहीं मानी. 1991 में मेधा लोगों को अपनी मांग मनवाने के लिए भूख हड़ताल पर बैठ गईं.





मेधा, नर्मदा नदी पर एक नाव में चढ़ कर बोलीं

लोगों ने मेधा की बात सुनी. 1991 में सरकार ने बांधों की योजना और उनके कारण होने वाली समस्याओं पर विचार करने का फैसला लिया. जो लोग बड़े बांधों के लिए पैसा दे रहे थे उनमें से कुछ ने परियोजना के लिए पैसा नहीं देने का फैसला किया. 1992 में मेधा को अमेरिका में एक पर्यावरण फाउंडेशन द्वारा गोल्डमैन पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

मेधा पाटकर के जीवन की महत्वपूर्ण तिथियाँ

1954 मेधा पाटकर का जन्म हुआ.

1970 के दशक में मेधा ने गरीब समुदायों के बीच काम करना शुरू किया.

1980 के दशक में वो नर्मदा नदी आंदोलन में शामिल हुईं.

1991 मेधा ने भूख हड़ताल करके विरोध प्रदर्शन किया.

1992 उन्हें गोल्डमैन पर्यावरण पुरस्कार मिला.

1999 मेधा ने बांधों के खिलाफ अपना विरोध जारी रखा.





1999 में सरदार सरोवर बांध का कुछ हिस्सा बनकर तैयार हुआ

हालाँकि, कुछ बाँधों का निर्माण आगे बढ़ा. इसके विरोध में मेधा ने और भी कई भूख हड़तालें कीं. 1994 में एक बाढ़ग्रस्त गांव को छोड़ने से इनकार करने पर उन्हें फिर से गिरफ्तार किया गया.

मेधा अब तक बांधों का निर्माण रोकने में असमर्थ रही हैं. अब वो यह सुनिश्चित करने के लिए काम कर रही हैं कि जिन लोगों को अपने घरों को छोड़ने के लिए मज़बूर होना पड़ा है उन्हें सरकार पुनर्वासित करे और उन्हें उचित मुआवज़ा दे. वो चाहती हैं कि विस्थापित लोगों के साथ उचित व्यवहार हो. मेधा नर्मदा नदी क्षेत्र में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए काम करती रहती हैं.



मेधा ने 1999 में बांधों के निर्माण के विरोध में एक और मार्च का नेतृत्व किया